Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

चौतरफा घिरे केसीआर, पुलवामा हमले की... 12

केजरीवाल और मनीष सिसोदिया लखनऊ में झोकेंगे...05

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ

वर्षः 13 | अंकः 124

मूल्यः ₹3.00/-

पेज : 12

लखनऊ | मंगलवार | 15 फरवरी, 2022

टिशू कल्चर विधि द्वारा तैयार किए गए ड्रैगन फ्रूट के पौधे

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के टिशू कल्चर प्रयोगशाला प्रभारी डॉ. आर. पी. व्यास ने ड्रैगन फ्रूट के पौधे प्रयोगशाला में टिशू कल्चर विधि द्वारा तैयार किए हैं। उन्होंने बताया कि टिशु कल्चर द्वारा तैयार पौधे बीमारी रहित होते हैं यह स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होते हैं। इसमें पोषकीय तत्व जैसे प्रोटीन, फैट, क्रुड फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज, विटामिंस जैसे कई तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। डॉ व्यास ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट की खेती की महाराष्ट्र प्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पश्चिमी बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में शुरुआत हो चुकी है। लेकिन इसके 80 फीसदी से ज्यादा फलों का आयात वियतनाम एवं अन्य देशों से हो रहा है। इसके पौध रोपण का उचित समय फरवरी से अक्टूबर तक होता है। कम पानी वाली फसल होने के कारण इसकी सिंचाई टपक विधि द्वारा होती है। उन्होंने बताया कि जिन किसानो को ड्रैगन फ्रूट खेती करनी है वह पौधों की अग्रिम मांग करें। क्योंकि पौधे मांग के अनुसार प्रयोगशाला में तैयार किए जाते हैं।सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण, पेट संबंधी समस्याओं, गठिया, डेंगू, हड्डियों एवं दातों में लाभकारी होता है। इसमे बीटा लाइंस, पॉलिफिनॉल्स और एस्कोरबिक एसिड जैसे प्रभावी एंटी ऑक्सीडेंट होते है। जिसके कारण यह शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

Azadi Ka Amrit Mahotsav

सत्यनिष्ठ, उत्कृष्ट

लोकनायक भारत

नई दिल्ली संस्करण वर्ष-01, अंक - 102 राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र Jt.c.p. Licence No.- F2 (L-1) Press-2021 मंगलवार, 15 फरवरी 2022 | पृष्ठ 12 | मूल्य 3 रु*

For epaper→ www.loknayakbharat.com नई दिल्ली से प्रकाशित

09 रोहित-धोनी को मिल सकती है पंत-अय्यर से चुनौती केकेआर, आरसीबी

ड्रैगन फ्रूट स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद लाभप्रद : डॉ व्यास

लोकनायक भारत न्यूज

कानपुर । सीएसए के टिशू कल्चर प्रयोगशाला प्रभारी डॉक्टर आरपी व्यास ने ड्रैगन फ्रूट के पौधे प्रयोगशाला में टिशू कल्चर विधि द्वारा तैयार किए हैं। उन्होंने बताया कि टिशु कल्चर द्वारा तैयार पौधे बीमार रहित होते हैं। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होते हैं। इसमें पोषकीय तत्व जैसे प्रोटीन, फैट, क्रुड फाइबर,कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज, विटामिंस जैसे कई तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते। सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट डायबिटीज, ह्रदय रोग, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण, पेट संबंधी समस्याओं, गठिया, डेंगू, हड्डियों एवं दांतों में लाभकारी होता है। ड्रैगन फ्रूट में बीटा लाइंस, पॉलिफिनॉल्स और एस्कोरबिक एसिड जैसे प्रभावी एंटी ऑक्सीडेंट से युक्त होता है। जिसके कारण शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है।डॉ व्यास ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट की खेती महाराष्ट्र प्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पश्चिमी बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में शुरुआत हो चुकी है। लेकिन ड्रैगन फ्रूट का 80% से ज्यादा फलों का आयात वियतनाम एवं अन्य देशों से हो रहा है। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट के पौधों का रोपण सीधे खेतों में किया जाता है इसका पौध रोपण का उचित समय फरवरी से अक्टूबर तक होता है। इसकी सिंचाई हेतु टपक विधि द्वारा सिंचाई उत्तम रहती है।क्योंकि यह फसल कम पानी चाहने वाली है। उन्होंने कहा कि खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था होना चाहिए।उन्होंने कहा कि ड्रैगन फ्रूट की खेती के साथ अंतः फसली खेती भी किसान भाई कर सकते हैं जिससे अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि 1 एकड़ में लगभग 2 हजार से 3.5 हजार पौधे आते हैं। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट को एक बार लगाने से 20 से 25 वर्ष तक फलत देता रहता है। डॉक्टर व्यास ने कहा कि प्रथम वर्ष 5 कुंतल प्रति एकड़, द्वितीय वर्ष 60 से 70 कुंतल, तीसरे वर्ष 150 कुंतल तथा चौथी वर्ष 150 से 200 तक प्रति एकड़ तक उत्पादन होता है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर ड्रैगन फ्रूट 20000 प्रति कुंतल बिक जाती है 1 एकड़ में लागत लगभग 6 से 8 लाख आती है। जबकि उत्पादन लगभग तीसरे वर्ष में किसान भाइयों को 28 लाख प्रति एकड़ के हिसाब से होता है। जबकि शुद्ध लाभ रुपए 20 से 22 लाख तक किसान भाइयों को प्राप्त हो जाता है। उन्होंने बताया कि जिन किसान भाइयों को ड्रैगन फ्रूट खेती करनी है वह पौधों की अग्रिम मांग करें। क्योंकि पौधे मांग के अनुसार प्रयोगशाला में तैयार किए जाते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

WORLD खबर EXPRESS

सोमवार, 14-02-2022 अंक-44

www.worldkhabarexpress.media

www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के डॉक्टर आरपी व्यास ने टिशू कल्चर विधि से तैयार किए हैं ड्रैगन फ्रूट

ड्रैगन फ्रूट की खेती संग दूसरी फसल उगाकर कमाएं ज्यादा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के टिशू कल्चर प्रयोगशाला प्रभारी डॉक्टर आरपी व्यास ने ड्रैगन फ्रूट के पौधे प्रयोगशाला में टिशू कल्चर विधि द्वारा तैयार किए हैं। उन्होंने बताया कि टिशू कल्चर द्वारा तैयार पौधे बीमारी रहित होते हैं। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभदायक होते हैं। इसमें पोषकीय तत्व जैसे प्रोटीन, फैट, फूड फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज, विटामिंस जैसे कई तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते। सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण, पेट संबंधी समस्याओं, गठिया, डेंगू, हड्डियों एवं दांतों में लाभकारी होता है। ड्रैगन फ्रूट में बीटा लाइन, पॉलिफिनॉल्स और एस्कोरबिक एसिड जैसे प्रभावी एंटी ऑक्सीडेंट से युक्त होता है। इस कारण शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है। डॉ. व्यास ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट की खेती महाराष्ट्र प्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पश्चिमी बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में शुरुआत हो चुकी है। लेकिन ड्रैगन फ्रूट का 80 प्रतिशत से ज्यादा फलों का आयात वियतनाम एवं अन्य देशों से हो रहा है। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट के पौधों का रोपण सीधे खेतों में किया जाता है। इसका पौध रोपण का उचित समय फरवरी से अक्टूबर तक होता है। इसकी सिंचाई हेतु टपक विधि द्वारा सिंचाई उत्तम रहती है। क्योंकि यह फसल कम पानी वाली है। उन्होंने कहा कि खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था होना चाहिए। ड्रैगन फ्रूट की खेती के साथ अंतः फसली खेती भी कर सकते हैं। इससे अतिरिक्त लाभ होगा। उन्होंने बताया कि एक एकड़ में लगभग दो हजार से 3.5 हजार पौधे आते हैं। ड्रैगन फ्रूट को एक बार लगाने से 20 से 25 वर्ष तक फल देता रहता है। डॉक्टर व्यास ने कहा कि प्रथम वर्ष 5 कुंतल प्रति एकड़, द्वितीय वर्ष 60 से 70 कुंतल, तीसरे वर्ष 150 कुंतल तथा चौथे वर्ष 150 से 200 तक प्रति एकड़ तक उत्पादन होता है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर ड्रैगन फ्रूट 20000 प्रति कुंतल बिक जाती है। एक एकड़ में लागत लगभग 6 से 8 लाख आती है, जबकि उत्पादन लगभग तीसरे वर्ष में किसान भाइयों को 28 लाख प्रति एकड़ के हिसाब से होता है। शुद्ध लाभ रुपए 20 से 22 लाख तक किसान भाइयों को प्राप्त हो जाता है। उन्होंने बताया कि जिन किसान भाइयों को ड्रैगन फ्रूट खेती करनी है वह पौधों की अग्रिम मांग करें। क्योंकि पौधे मांग के अनुसार प्रयोगशाला में तैयार किए जाते हैं।

द्वितीय और अंकिता वर्मा तृतीय स्थान पर रहीं। (संवाद)

अमर उजाला कानपुर 15/02/2022

सीएसए में ड्रैगन फ्रूट के पौधे तैयार

कानपुर। सीएसए की टिशू कल्चर प्रयोगशाला में ड्रैगन फ्रूट के पौधे तैयार हो गए हैं। प्रयोगशाला के प्रभारी डॉ. आरपी व्यास ने बताया कि टिशू कल्चर विधि से तैयार पौधों में बीमारियां नहीं लगती हैं। इस फल में प्रोटीन, फैट, क्रूड फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज, विटामिंस जैसे कई तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण, पेट संबंधी समस्याओं, गठिया, डेंगू समेत कई बीमारियों में लाभकारी है। पौधरोपण का उचित समय फरवरी से अक्तूबर तक होता है। उन्होंने बताया कि एक एकड़ में दो हजार से 3.5 हजार तक पौधे रोपे जा सकते हैं। एक बार पौधा लगाने के बाद यह 20 से 25 वर्ष तक फल देता रहता है। एक पौधे की कीमत डेढ़ सौ रुपये है। (संवाद)

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:23 | देहरादून, सोमवार , 14 फरवरी, 2022 | पृष्ठ:08

ड्रैगन फ्रूट की खेती करके अधिक लाभ कमाएं किसानः डॉ. आरपी व्यास

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के टिशू कल्चर प्रयोगशाला प्रभारी डॉ० आरपी व्यास ने ड्रैगन फ्रूट के पौधे प्रयोगशाला में टिशू कल्चर विधि द्वारा तैयार किए हैं उन्होंने बताया कि टिशु कल्चर द्वारा तैयार पौधे बीमार रहित होते हैं उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभदायक होते हैं इसमें पोषकीय तत्व जैसे प्रोटीन, फैट, क्रुड फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ग्लूकोज, विटामिंस जैसे कई तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण, पेट संबंधी समस्याओं, गठिया, डेंगू, हड्डियों एवं दातों में लाभकारी होता है ड्रैगन फ्रूट में बीटा लाइंस, पॉलिफिनॉल्स और एस्कोरबिक एसिड जैसे प्रभावी एंटी ऑक्सीडेंट से युक्त होता है जिसके कारण शरीर में प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है डॉ व्यास ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट की खेती महाराष्ट्र प्रदेश, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, पश्चिमी बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में शुरुआत हो चुकी है। लेकिन ड्रैगन फ्रूट का 80: से ज्यादा फलों का आयात वियतनाम एवं अन्य देशों से हो रहा है उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट के पौधों का रोपण सीधे खेतों में किया जाता है इसका पौध रोपण का उचित समय फरवरी से अक्टूबर तक होता है इसकी सिंचाई हेतु टपक विधि द्वारा सिंचाई उत्तम रहती है क्योंकि यह फसल कम पानी चाहने वाली है।

उन्होंने कहा कि खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ड्रैगन फ्रूट की खेती के साथ अंतः फसली खेती भी किसान भाई कर सकते हैं जिससे अतिरिक्त लाभ प्राप्त होगा उन्होंने बताया कि 1 एकड़ में लगभग 2 हजार से 3.5 हजार पौधे आते हैं। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट बारे एक बार लगाने से 20 से 25 वर्ष तक फलत देता रहता है। डॉक्टर व्यास ने कहा कि प्रथम वर्ष 5 कुंतल प्रति एकड़, द्वितीय वर्ष 60 से 70 कुंतल, तीसरे वर्ष 150 कुंतल तथा चौथी वर्ष 150 से 200 तक प्रति एकड़ तक उत्पादन होता है उन्होंने बताया कि आमतौर पर ड्रैगन फ्रूट Rp2000 प्रति कुंतल बिक जाती है 1 एकड़ में लागत लगभग 6 से 8 लाख आती है जबकि उत्पादन लगभग तीसरे वर्ष में किसान भाइयों को 28 लाख प्रति एकड़ के हिसाब से होता है जबकि शुद्ध लाभ रुपए 20 से 22 लाख तक किसान भाइयों को प्राप्त हो जाता है उन्होंने बताया कि जिन किसान भाइयों को ड्रैगन फ्रूट खेती करनी है वह पौधों की अग्रिम मांग करें क्योंकि पौधे मांग के अनुसार प्रयोगशाला में तैयार किए जाते हैं।